निबंध (ESSAY)

निर्धारित समय: 3 घंटे
Time allowed: 3 Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

Name: Shubham Thakur

Mobile Number:

Medium (English/Hindi):

Email:

Center & Date:

UPSC Roll No.:

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Answer Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड-A

उम्मीदवार को इ... हाशिये में नहीं ... चाहिये।
(Candidate mus... write on this m...

1. "एक बड़े संकट को कभी व्यर्थ नहीं जाने दें"
Never let a big crisis go to waste.

"हे सारथे! द्रोण क्या देवेन्द्र भी आकर लड़ें,
है खेल, क्षत्रिय बालकों का व्यूह भेदन कर लड़ें।
मैं सत्य कहता हूँ सखे, सुकुमार मत जानो मुझे।
देवेन्द्र से भी युद्ध को प्रस्तुत सदा मानो मुझे"

अर्जुन की अनुपस्थिति, गुरु द्रोण द्वारा चक्रव्यूह की घोषणा, चारों पाण्डवों की असमर्थता, सेना में भय, संशय की स्थिति, संकट के बादल: व्यूह को कौन तोड़ेगा?

पाण्डवों पर आए इस संकट को एक अल्यस्क अर्जुन पुत्र अभिमन्यु नें एक अवसर के रूप में देखा। चक्रव्यूह की आधी विधा ज्ञान, मृत्यु की निश्चितता

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

के बावजूद अभिमन्यु नें संकट को व्यर्थ न जाने दिया, बल्कि इस अवसर का लाभ उठाकर युगों-युगों तक स्वयं की कीर्ति निर्मित कर दी.....।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

क्या वास्तव में यह संकट था : पाण्डवों पर, अभिमन्यु के जीवन पर, सुभद्रा की कोख पर; या कीर्ति का अनुपम साधन।

इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा हुआ है, जहाँ बड़े संकट को अपने लिए अवसर के रूप में बदला गया। यद्यपि इस प्रयास में व्यक्ति का जीवन, मरण में बदल गया लेकिन व्यक्ति सदा के लिए अमर हो गया।

दरअसल संकट तो देखने का

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

नजरिया है, जो व्यक्ति को अतीत में की गयी उन गलतियों को सुधारने का मौका देता है। व्यक्ति को अवसर देता है कि, आवश्यक संशोधन कर बेहतर का निर्माण करे। जैसे कि सिकन्दर के आक्रमणों नें भारतीय उत्तर-पश्चिम सीमा की कमजोरी उजागर की। आगे चलकर इस अवसर को समझते हुए चाणक्य नें चन्द्रगुप्त के बल पर अखिल आर्यावर्त का सपना पूरा किया।

वस्तुतः संकट व्यवस्था में विद्यमान कमजोरी को उजागर कर देता है, यह अवसर देता है कि व्यवस्था को मजबूत किया जाए। अमेरिकी गृहयुद्ध इसी संकट का उदाहरण है जहाँ गृहयुद्ध के संकट नें अमेरिका की अखण्डता

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

सुनिश्चित की। ऐसा ही संकट भारतीय अर्थव्यवस्था पर आया था, परन्तु भारतीय नीति निर्माताओं ने उसे व्यर्थ नहीं जाने दिया, बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के माध्यम से अर्थव्यवस्था को मजबूत किया।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

व्यापक रूप में देखें तो प्रलय (संकट), सृजन का पूर्वगामी है। रचनात्मकता के लिए विनाश की पृष्ठभूमि उत्तरदायी है। यह व्यक्ति की क्षमताओं को बढ़ाकर व्यक्ति को अनअपेक्षित लाभ देती है। प्रसव के दौरान माँ के जीवन पर आया संकट, वास्तव में एक प्रारंभ होता है एक कोमल, सुकुमार जीवन का। प्रसव संकट का यह उदाहरण निश्चय

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

ही संकट को व्यर्थ न जाने देने, साहस से कार्य लेकर लाभों को दर्शाता है।

यह भी आवश्यक नहीं कि संकट सदैव भौतिक हो। महात्मा बुद्ध द्वारा वृद्ध, रोगी, मृत, सन्यासी को देखकर उनके मन में उपजा वैचारिक द्वन्द भी एक व्यक्तिगत संकट था। लेकिन बुद्ध ने इस संकट को व्यर्थ न जाने दिया बल्कि संकट को अपने अस्तित्व पर चिंतन का साधन समझा। जिसका परिणाम "गौतम से बुद्ध की यात्रा" के रूप में निकला।

ऐसे संकट मानवीय भावों के उत्तेजक के रूप में सामने आते हैं। जो मानवीय कौशल, दक्षता, क्षमता को बढ़ाकर मानव विकास का अवसर

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उपलब्ध कराते हैं। वस्तुतः ये संकट आपसी सहयोग की आवश्यकता रेखांकित कर जाते हैं। जैसे- हालही की कोविड महामारी, मानव जाति पर सदी का सबसे बड़ा संकट रही, लेकिन हमने इस संकट को अवसर में भी बदला। स्वास्थ्य-तकनीकी क्षेत्र में व्यापक अनुशंधान, टीके का निर्माण इसी अवसर दोहन का उदाहरण है।

लेकिन यहाँ ध्यान देने वाली बात है कि ऐसे संकटों का आवश्यक लाभ सुनिश्चित करने के लिए व्यक्तिगत दक्षता-कौशल आवश्यक है। वस्तुतः नवाचारी उपाय नवाचारी मस्तिष्कों की देन होते हैं। संकट को अवसर में बदलने के

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

लिए व्यक्ति में संघर्ष की क्षमता आवश्यक है। इस बात की आवश्यकता होती है, कि, समय आने पर व्यक्ति समाज, व्यवस्था अथवा इतिहास की धारा से भी दो-दो हाथ करने के लिए तैयार रहे। वस्तुतः भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक ओर ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन दूसरी ओर द्वितीय विश्व युद्ध में जापानी आक्रमण। ऐसी दशा में भी गाँधी का भारत छोड़ो आंदोलन, करो या मरो का नारा, इसी संकट/व्यवस्था के विरुद्ध रणभेरी था।

ऐसा ही संकट माउन्टेन मैन मांझी के व्यक्तिगत जीवन में भी भावनात्मक रूप में आया। परन्तु अपने दृढ़ निश्चय के बल पर पहाड़ से रास्ता

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

निकालकर मानवीय क्षमता और उस क्षमता से संभावित लाभों को उजागर किया।

निःसंदेह ऐसे कार्य इतिहास को मजबूर कर देते हैं कि उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाये। किन्तु संकट को व्यर्थ जाने की देने वाले आलोचना का शिकार होते हैं। वस्तुतः सिक्के का दूसरा पहलू यही है। ऐसे कृत्यों पर भविष्य, इतिहास पर प्रश्न उठाता है। समय रहते अवसर का लाभ न उठाने वाले इतिहास के अंधकार में डूब जाते हैं-

"समय लाभ सम लाभ नहीं,
समय चूक सम चूक
चतुरन चित रहिमन लगी,
समय चूक की हूक ॥"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् परमाणु अस्त्रों पर विश्व की महाशक्तियों की चुप्पी ने एक संकट को अवसर में बदलने का मौका गवाँ दिया। शायद यह उसी चूक का परिणाम है कि आज देशों में शस्त्रीकरण की प्रतिस्पर्द्धा है। वस्तुतः क्या यह बेहतर न होता कि तभी उस संदर्भ में प्रयास किए जाते?

संकट को व्यर्थ जाने देने पर अस्तित्व का संकट भी समस्या के रूप में उपज सकता है। वस्तुतः 2013 में उत्तराखण्ड बाढ़ एक समस्या/संकट के रूप में उपजी, साथ ही यह सुधारों के लिए एक बिन्दु को रेखांकित कर गयी। ऐसा ही दूसरा उदाहरण चेर्नोबिल परमाणु संयंत्र लीक था, जिस

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

संकट में नीति निर्माताओं ने ध्यान न देकर उसे व्यर्थ में जाने दिया। सुरक्षा उपायों की यह कमी 2011 फुकुशिमा परमाणु संयंत्र आपदा के रूप में निकली।

वर्तमान में होने वाला जलवायु संकट भी इसी ओर दृष्टिपात करता है। यह मानवीय प्रयासों की कमी को दर्शाता है, साथ ही बेहतर कल के लिए वर्तमान में प्रयास की आवश्यकता रेखांकित है।

सारूप में
~~दरअसल~~ संकट, संकेत मात्र होता है तथा आवश्यकता सुधार कर बेहतर भविष्य निर्माण की होती है। इस प्रक्रिया का पालन करने वाले इतिहास में अमिट स्याही से नाम

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

लिखे जाने के पात्र होते हैं', वहीं संकट रूपी समय व अवसर का समय पर लाभ न उठाने वाले 'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत' के अनुरूप अपने कृत्यों पर पछतावा करते रहते हैं।

" श्रेष्ठ है, प्रलय को भुजाओं से मोड़ दो,
हो सके, इस निमित्त अपना सर्वस्व छोड़ दो।
रहा संभव, तो सृजन की इबारत लिखी जायेगी,
अन्यथा, इतिहास में तुम्हारी गवाही उतारी जायेगी।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लि चाहिये।
(Candidate must write on this mar

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

2.

मैं जिन खुशनसीब लोगों को जानता हूँ, वह वो लोग हैं जो दूसरों की सेवा में खुद को खो देते हैं।

"रालेगनसिद्धी, जैसा छोटा गाँव, एक व्यक्ति समाज सुधार को अपना परम धर्म मानकर इस कार्य में अपना जीवन व्यतीत कर देता है। 60-70 वर्ष की उम्र, आँखों पर चश्मा, शरीर की जरा अवस्था के बावजूद गाँव में शराबबंदी, गौशाला, शिक्षा, स्वच्छता के प्रयासों से बेहतर बचपन, बेहतर जीवन, बेहतर समाज का सपना पूरा करता है।

; और जब देश की बारी आती है, तब समाज सेवा को परम

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

सेवा मानकर लोकपाल जैसी संस्था के निर्माण के लिए सम्पूर्ण व्यवस्था से टकरा जाता है।"

[समाजसेवी : अन्ना हजारे]

इस सम्पूर्ण संघर्ष, सारे प्रयासों के पीछे एक ही निमित्त : 'समाज सेवा' और 'समाज सेवा से मिलने वाला आत्मिक सुख'।

शायद इन्हीं कारणों से महात्मा गाँधी की उपर्युक्त पंक्तियाँ "मैं जिन खुशनसीब..... खुद को खो देते हैं", आज भी प्रासंगिक है।

दरअसल, दूसरों की सेवा से व्यक्ति को आत्मिक सुख की प्राप्ति होती है, जो भौतिक सुखों से सर्वथा श्रेष्ठ होता है। इसी संदर्भ में

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

पश्चिमी दार्शनिकों का उत्कृष्ट सुखवाद इस बात की पुष्टि करता है, जिसमें जेरेमी बेंथम, मिल जैसे विचारक आत्मिक सुखों को वरीयता देते हैं।

समाज सेवा ही तो मानवता का असली अर्थ है। यही वह कारक है जो आपसी सहयोग से मानव को मानव बनाता है। अन्यथा क्षुधा शांति का प्रयास तो जानवर-अन्य जीवों में दिखाई देता है। वस्तुतः यही आपसी सहयोग परम धर्म है।

"परहित सरिस धर्म नहीं भाई,
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।"

समाज सेवा का यह कार्य द्विआयामी प्रभाव उत्पन्न करता है, जहाँ

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

एक ओर बौद्ध धर्म के प्रतीत्य समुत्पाद के रूप में तृष्णा की समाप्ति कर सकारात्मक स्वभाव उत्पन्न करता है, वहीं दूसरी ओर समाज में इस संदर्भ में दूसरों को प्रेरित करता है। ऐसे प्रयास व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि करते हैं, साथ ही बेहतर समाज का लक्ष्य भी साकार करते हैं।

समाज सेवा के इसी संदर्भ में स्वामी विवेकानंद ने दीन-हीन मनुष्यों को अपना ईश्वर माना और उनकी सेवा को अपनी ईश्वर आराधना। उनका यह विचार एक बेहतर कल के निर्माण की राह दिखाता है, जहाँ व्यक्ति अपनी मूल परोपकारी प्रवृत्ति

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

के अनुरूप कार्य करेगा। समाज में विषमता को समाप्त करने में समाज सेवा का विचार बिना किसी संशय के प्रभावी है।

मार्क्स ने भी मानव स्वभाव की इस प्रवृत्ति को उजागर किया जहाँ उसे मनु उसने मनुष्य को मूलतः परोपकारी बताया, साथ ही व्यवस्था के बंधन में जकड़ा हुआ पाया। ऐसा परोपकारी मनुष्य न केवल अपने, बल्कि सम्पूर्ण समाज के हितों को प्रधानता देता है। ऐसे लोगो के लिए "वसुधैव कुटुम्बकम्" का भाव चरम होता है। इसी कारण ये लोग समाज सेवा में लगे रहते हैं।

समाज सेवा के भाव से परिपूरित जब ऐसा व्यक्ति कार्य निष्पादन

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

करता है, तब अभिव्यक्ति-व्यवहार में संतुलन स्थापित होने से आनंद [पश्चिमी दर्शन में यूडोमोनिया] की स्थिति उत्पन्न होती है। ऐसा कार्य व्यक्ति को चारित्रिक सबलता प्रदान करता है, साथ ही समाज के प्रति कर्तव्य निर्वहन का भाव उत्पन्न करता है।

उपर्युक्त कर्तव्य निर्वहन भाव आवश्यक भी है वस्तुतः जिस समाज में व्यक्ति जन्मा, बढ़ा हुआ, जिसके संसाधनों का प्रयोग किया; उस समाज के प्रति समाजसेवा, सामाजिक ऋण मुक्ति का साधन है। इसी प्रेरणा के फलस्वरूप महात्मा गाँधी जैसे राष्ट्रीय आंदोलन नेतृत्वकर्ताओं ने

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

अपना जीवन समाज सेवा में लगा दिया।

हालाँकि यहाँ ध्यान देने वाली बात है कि, समाज में सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में ही कार्य करें यह आवश्यक नहीं। वस्तुतः जहाँ एक ओर मदर टेरेसा ने समाज में रहकर समाज की सेवा की, वहीं दूसरी ओर तिरंगे में लिपटकर उसमें अपने लहू का लाल रंग लगाने वाले भी समाज सेवक हैं।

दरअसल समाज सेवा किसी एक निश्चित सीमा से नहीं बँधी है, ऐसा कोई भी कृत्य जो समाज को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में सुधारता हो समाज सेवा है। और ऐसे समाज-सेवक अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

बेहतर सुख प्राप्त करते हैं।

शायद यही कारण रहा होगा कि कबीर ने भी पत्थरों में ईश्वर को देखने के बजाय समाज सुधार के कार्य को अपना धर्म बनाया, जिससे न केवल समाज सुधार को गति मिली बल्कि कबीर का नाम भी इतिहास में अमर हो गया।

आज भी समाज सेवा के ऐसे कार्य प्रशंसा के पात्र बनते हैं। जैसे टाटा ट्रस्ट द्वारा की जाने वाली शिक्षा की पहले; स्कूल बनवाना, मुफ्त किताबें, बच्चों की शिक्षा पर निवेश, ट्रस्ट की विश्वसनीयता को बढ़ाती हैं।

भारतीय परिदृश्य में वर्तमान

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

राजनैतिक सिद्धांत भी तो इसी समाजसेवा की ओर इंगित करते हैं; ताकि संविधान की भावना के अनुरूप गाँधी का रामराज्य बनाया जा सके।

लेकिन ऐसा नहीं है कि, समाजसेवा से प्राप्त इस सुख की कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ती। वस्तुतः इतिहास गवाह है जहाँ राजा राम मोहन राय जैसे लोगों को रूढ़ीवादी विरोधों का सामना करना पड़ा तो वहीं सावित्रीबाई फुले पर गोबर फेंककर अपमानित करने का प्रयास किया गया।

लेकिन ऐसे समाज सेवकों ने अपनी बेहतर समाज बनाने की चाह के बल पर संघर्ष का रास्ता चुना।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तमाम विरोधों के बावजूद सारे साहस के साथ काम कर सेवा का परमआनंद अनुभव किया। ऐसा आनंद जिसे केवल प्राप्त करने वाला महसूस कर सकता है, जिसका शब्दों में बखान संभव नहीं। यह सेवा आनंद की ही महिमा थी कि बैरिस्टर की पढ़ाई, आर्थिक सम्पन्नता के बावजूद एक व्यक्ति ने अपना सारा जीवन एक चश्मा, एक लाठी और एक धोती पर निकाल दिया...!

उससे इसके पीछे का कारण पूछने पर प्राप्त उत्तर निबंध की के विषय को चरितार्थ करता है-

"नर सेवा नारायण सेवा"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को
हाशिये में नहीं
चाहिये।
(Candidate mu
write on this m

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation